"स्वतन्त्रता दिवस पर लालकिला,
दिल्ली से सन्देश"

दिनांक 15.8.62

भाईयो और बहिनों और बच्चों,

आपमें जित्ते यहां बच्चे बैठे हैं उनको तो कोई याद भी नहीं होगी उस जमाने की, जब हिन्दुस्तान में आज़ादी नहीं थी, जो आप में जवान हैं वो शायद बच्चे हों उस वक्त, बहुत याद न हो । पन्द्रह बरस हो गए जबकि कौन ने, हमारे देश ने करवट ली और एक नया युग किया । पन्द्रह बरस हुए और आज उसका जन्म दिन है, सालगिरह है और हम उसको मनाने को यहां आए हैं इस लाल किले पर जो कि पहली निशानी थी आज़ादी आने की, यहां झण्डा फहराना । तो इस, यह पन्द्रह बरस तो आपको मुबारिक हों, हम सभों को । लेकिन इस पन्द्रह बरस में क्या हुआ, क्या क्या हमने किया और क्या क्या हमने नहीं किया ? जो करना चाहिए था । हजारं दिक्कतें पेश आई हैं आप जानते हैं और बहुत काफी दिक्कतें अब भी हैं हमारे मुल्क के सामने, बहुत कुछ हमने किया, और बहुत कुछ यकीनन आप लोग और हम मिल के करेंगे । क्योंकि कोई हम आज़ाद हुए तो कोई महज़ एक ऊपर की कार्यवाही नहीं थी, यह एक बलबला था जो कि कौम में, करोड़ों आदमियों में उठा था और जिसने यह नतीजा हासिल किया था । वो चीज़ अपना काम पूरा कर के रहेगी और उस काम पूरा करने में के माने हैं कि मुल्क में जित्ते लोग हैं वो खुशहाल हों, वो एक ऐसी समाज में रहें, जिसमें बराबरी

है, ऊंच-नीच बहुत कम है, जो कि समाजवादी समाज है । और जात-पांत का/भी जिसमें फेर नहीं गिना जाता, ऐसी समाज हम चाहते हैं, इसकी बनाने की कोशिश है लेकिन उस कोशिश के शुरू में भी काफी दिक्कतें हैं, हुई हैं और हैं, उनका सामना करना है । सामना हमने बहुत बातों का किया । याद है आपको इसी दिल्ली शहर में आज़ादी के बाद जो मुसीबत आई थी, जो कि हौलनाक बातें हुई थीं । उसका भी सामना हमने किया और उसको भी काबू में लाए । तो उसके बाद और क्या होगा जो हमें हिलाए या हममें घबराहट पैदा करें ।

आजकल भी आप देखें मुल्क के पचासों सवाल हैं, बहुत कुछ हमें तकलीफें भी होती हैं और हमारी सरहदों पर भी हमें होशियार रहना है, क्योंकि लोग ऐसे मौजूद हैं सरहदों पर जो कि बुरी आंखों से देखते हैं हमारे मुल्क की तरफ और हमलावर होते हैं, इसके लिए कोई कौम भी ज़िन्दादिल कौम जागती रहती है, तैयार रहती है उसका सामना करने को, रोकने को ।

आप जानते हैं कि हमारा उसूल शुरू से क्या रहा है, शांति का, अमन का, अपने मुल्क में, बाहर के, मुल्कों के साथ । हमने सब मुल्कों से दोस्ती की कोशिश की और है, कामयाब भी उसमें बहुत दर्जे हुए । लेकिन फिर भी एक बदकिस्मती है कि हमारी सरहदों पर हमारे जो भाई रहते हैं वो लोग इस निगाह से, गलत निगाह से हमारे तरफ देखें और कभी कभी लड़ाई का चर्चा करें । हमें फिर भी कोई घबराना नहीं चाहिए, हाथ-पैर हमारे नहीं फूलने चाहिए लेकिन

=3/

होशियार रहना चाहिए, तैयार रहना चाहिए, तगड़े रहना चाहिए । इसी तरह से हम सामना कर सकते हैं हर मुसीबत का । मुल्क के अन्दर हमारी ताकत कैसे बढ़ती है ? ताकत के लिए, मुल्क को बचाने को फौज है और और चीजें भी हैं । लेकिन आखिर में एक कौम बचाती है आजकल के मुल्कों को । एक कौम, काम कर के, मेहनत कर के, एक कौम जिसमें एकता हो, एक कौम जो मेहनती हो, वो मुल्क की ताकत बढ़ाती है । चाहे वो खेत में काम करता है या कारखाने में या दुकान में । सब अपना-अपना फर्ज ईमानदारी से अदा करें, मेहनत से ताकि मुल्क की ताकत बढ़े और एकता हो । तब कोई भी दुनिया में उसके ऊपर हमला नहीं कर सकता है ।

हमारी कहानी रही है कि आपस की फूट की, जिससे बाहर वालों ने फायदा उठाया, अब तो वो नहीं होनी चाहिए । छोटी छोटी बातें होती हैं बहस की, खैर, बहस हो, ठीक है बहस में तो कोई हर्ज नहीं । लेकिन हमेशा हमें याद रखना है कि मुल्क के साथ गद्दारी करनी है आपस में फूट करना, मुल्क को कमजोर करना है और यह जो आज़ादी इत्ती मुश्किल से आईथी इसको खतरे में डालना है ।

तो मैं चाहता हूं आज के दिन खास तौर से आपको जरा याद दिलाऊं उस जमाने की पन्द्रह बरस पहले और उसके भी पहले जबकि आज़ादी की जंग हमारे मुल्क में होती थी, जबकि हमारे पास हमारे बड़े नेता महात्मा गांधी जी थे । और हमें कदम-ब-कदम ले जाते थे हम ठोकर खाते थे, लड़खड़ाते थे, गिरते थे, लेकिन फिर भी उनको देख कर हिम्मत

होती थी और बड़े हो जाते थे । और इस तरह से उस जमाने के लोगों को उन्होंने तैयार किया । इस तरह से उन्होंने एक मजबूत कौम को तैयार किया जिसमें एकता थी जिसमें किसी कदर सब लोगों में सिपाहीपना था और उन्होंने सामना किया बड़े साम्राज्य का और आखिर में शान्ति से कामयाब हुए । जमाना याद करने की बात है हमें, क्योंकि उससे कुछ अपने दिलों को बढ़ाना है, कैसी मुसीबतों का सामना हमने किया था । आजकल के जमाने में छोटी सी भी तकलीफ हमें बड़ी तकलीफ मालूम होती है, तकलीफ तो जाहिर है नहीं होनी चाहिए, हमें हटाना चाहिए, उसे, लेकिन नए हिन्दुस्तान के बनाने के लिए आप और हम बना नहीं सकते उसे बगैर बोझे उठाये, बोझे बढ़ाए और उनको उन बोझों को उठा के आगे बढ़ें, खाली हम एक रंजिदा हों और शिकायत करें, तो यह तो नहीं हो सकता आजकल तो छोटी बातें हैं । अगर फर्ज कीजिए इत्तफाक से कोई असली खतरा हिन्दुस्तान की आज़ादी पे हुआ, हमारी सरहदों पे और जगह तब कित्तीं तकलीफ उठानी पड़ेगी आपको, याद कीजिए ।

मैं आशा करता हूं कि ऐसा नहीं होगा, लेकिन उसके बचाव के लिए भी आज से तैयार होना है, यह नहीं कि हम इस वक्त गफलत में पड़े और उस वक्त सब लोग दिखाएं कि हम भी बड़े बहादुर हैं, पहलवान हैं । इसलिए हमें इन छोटी बातों को छोड़ना है, बड़ी बातों को देखना है और एक कौम को बनाना है जिसमें पक्की तौर से एकता है । हमारा

हिन्दुस्तान बहुत लोगों, बहुत मजहबों का है, बहुत तरह के लोगों का है । हिन्दू हैं, मुसलमान हैं, ईसाई हैं, सिक्ख हैं, बौद्ध हैं, पारसी हैं वगैरह । सब बराबर के हैं । हमारे मुल्क में याद रखिए और जो आदमी इसके खिलाफ आवाज उठाता है वो हिन्दुस्तान को धोखा देता है, और हिन्दुस्तान की राष्ट्रीयता को कमजोर करता है । हम एक राष्ट्र में हैं और जो कोई इस राष्ट्र में रहता है वो भारत माता का प्यारा लड़का या लड़की है और सब हमारे भाई हैं और बहिन हैं और एक बड़ी बिरादरी है । {तालियां}

तो इस तरह से हमें देखना है एक फिरकापरस्ती से देखना, हमारा फिरका, हमारी सम्प्रदा और सब अलग हैं, जातिभेद की तरफ जाना उससे कमजोरी होती है ।

आजकल का जमाना क्या है जरा आप देखिए शायद आपमें से बाज़ लोगों ने रात को देखा हो कि कैसे आजकल आसमान पर दो नए सितारे घूम रहे हैं । दो आदमी, सितारे मैंने कहा, लेकिन दो आदमी दुनियां से अलग हो के सैकड़ों मील दुनियां का घेरा कर रहे हैं जो रूस से निकले हैं, उसके पहले अमेरिका से ऐसे निकले थे । तो कैसी दुनियां है जहां ऐसी बातें होती हैं, सारी दुनियां बदल रही है, इंसान बदल रहा है, नयी नयी ताकतें आती हैं और अगर हम इनको नहीं समझें, और हम नहीं समझ के उनको इस्तेमाल करें अपनी भलाई के लिए और दुनियां की भलाई के लिए तब हम पिछड़ जाएंगे, रह जाएंगे । खाली हम ऐंठते रह जाए और लम्बी-लम्बी बातें

AIR
CALL NO.
ACC NO.
ARCHIVES
LIBRARY

करें, दुनिया आगे बढ़ जायेगी । इसलिए हमें समझना है कि हम एक बदलती हुई दुनिया में, बदलते हुए हिन्दुस्तान में रहते हैं और अगर हम तेजी से नहीं बदलते उसी के साथ तो हम पीछे रह जाएंगे, हमें बदलना है । हमें विज्ञान को बढ़ाना है, हमें अपनी मेहनत कर के इस मुल्क में नए तरीके निकालने हैं, कारखाने बनाने हैं, खासकर हमारी खेती की तरक्की करनी है, क्योंकि वो जड़ है हिन्दुस्तान की, यहां के किसान उसकी पीठ हैं, जड़ हैं जो कुछ कहिए । लेकिन अभी है, अभी तक वो ठीक हैं, जब तक आज की दुनिया को समझते हैं और आजकल की दुनिया के तरीकों को लेते हैं । आजकल के औजारों को इस्तेमाल करते हैं और आजकल के हल चलाते हैं और यह नहीं कि हजार बरस पुराने के औजार चला रहे हैं, दुनिया बदल गयी और खेती एक हजार बरस पुरानी रही, इसमें हम पिछड़ जाते हैं, हमें बदलना है, यह हम बदल रहे हैं ।

हमारे यहां पंचायती राज है और तरह-तरह की बातें इतिहास में हो रही हैं जो कि हमारे करोड़ों आदमियों को जो कि गांव में रहते हैं हल्के-हल्के बदल रहे हैं । सब में बड़ी बात यह है, यह नहीं कि आपने एक बड़ी इमारत देखी या बड़ा कारखाना देखा बल्कि यह कि हिन्दुस्तान के किसान किस तरह से बदल रहे हैं हल्के-हल्के । पढ़ाई से, स्कूल पहुंचे, वहां गांव गांव में, उनके बच्चे पढ़ रहे हैं । एक दिन आने वाला है बहुत जल्दी जबकि कोई बच्चा हिन्दुस्तान में रही रहे जिसको पढ़ने-लिखने का मौका नहीं मिला है ।

हमारा स्वास्थ्य पहले आज़ादी के जरा ही पहले, बत्तीस बरस की उम्र हमारी औसत समझी जाती थी, अब करीब पचास के हो गयी है बावजूद इत्ती आबादी के बढ़ने के, क्या माने हैं इसके ? इसके माने नहीं हैं कि सब लोग पचास के होते हैं या पचास के ज्यादा कोई नहीं होता लेकिन औसत यह है । इसके माने यह हैं कि मुल्क भर को देखते हुए बावजूद आबादी बढ़ने के लोगों की सेहत ज्यादा अच्छी है, क्यों सेहत अच्छी है ? इसलिए कि उन्हें खाना अच्छा मिलता है पहले के मुक़ाबले में, पहले तो फाकेमस्ती थी, अब नहीं होती, बाज़ की होती हो मैं नहीं कह सकता, लेकिन आमतौर से नहीं होती । सेहत अच्छी है, सब में बड़ी बात सेहत में खाना मिलना सब में ज़रूरी बात है एक कौम के लिए खाना उसको मिले, कपड़े मिलें, घर रहने को मिले, उसके स्वास्थ्य का प्रबन्ध हो और उसके पढ़ाई का हो और उसके काम का हो और उसके काम से यह सब बातें हों । यह हमारा ध्येय है, मकसद है । तो छोटी-छोटी बातों में हम फंसे रहते हैं रोजमर्रा की दिक्कतों में लेकिन हमेशा हमें यह याद रखना है और यह याद रखना है कि पुराने कि आज़ादी के पहले जो लोग थे गांधी जी के नीचे और गांधी जी के नेतृत्व में, क्या क्या उन्होंने किया, कुछ उससे हम सबक सीखें, कुछ जान आए हममें और उसी रास्ते पर हम चलें ।

क्योंकि मेरा ख्याल है जिस रास्ते पर महात्मा जी ने हमें चलाया था जिसमें हम लोग कमजोर थे, दुर्बल थे फिर भी हम में कुछ हिम्मत भर दी थी, हमें भी कुछ सिपाही बनाया था उसी रास्ते पर हमें

चलना है । सिपाही खाली वर्दी पहन के फौजी लोग नहीं होते हैं, सिपाही हरेक आदमी होता है जो एक काम को उठाए सिपाही की तरह से करे और हमें सारे हिन्दुस्तान को बच्चों, बच्चों को और बड़ों को उधर दिखाना है और याद रखिए हमारी फौज को देखिए, उस फौज में हर धर्म के आदमी हैं, हर मजहब के आदमी हैं, फौज में फर्क नहीं है, सब बराबर के हैं, सभों को बराबर के अधिकार हैं । इस तरह से हमें अपने मुल्क को बनाना है ।

आज का दिन यों भी शुभ-दिन है, आज़ादी का दिन है, लेकिन आज और एक तरह से शुभ-दिन है । आज रक्षा-बन्धन है और हम एक दूसरे को राखी बाधते हैं । राखी किस चीज की निशानी है ? {तालियां} राखी एक वफादारी की निशानी है । एक दूसरे की हिफाजत करना, रक्षा करना । भाई-बहिन की करें, औरों की करें । आज आप राखी समझिए अपने दिल में बांधिए भारत माता को {तालियां} और उसके साथ, उसके साथ फिर से अपनी प्रतिज्ञा दोहराइए, अपनी इकरार दोहराइए कि आप भारत की सेवा करेंगे, भारत की रक्षा करेंगे चाहे जो कुछ भी हो । और उस रक्षा करने के माने हैं यह नहीं कि अलग-अलग आप कोई बहादुरी दिखायें, वो भी हो सकता है वक्त पर, लेकिन उसके माने हैं कि हम आपस में हम लोग मिल के रहेंगे, हम नाजायज फायदा एक दूसरे का नहीं उठाएंगे, हम एक दूसरे की मदद करेंगे, सहयोग करेंगे सहकारी करेंगे और इस तरह से एक कौम बनाएंगे जिसको कोई हिला भी न सके । तो

आज के दिन, आज़ादी के दिन और आज़ादी के दिवस और रक्षा-बन्धन के दिन हम और आप इस समय यहां मिलकर इस पवित्र भूमि में जहां के पहले बार पन्द्रह अगस्त को, पन्द्रह बरस हुए हमने झण्डा यह फहराया था, एक निशानी आज़ादी की, हम फिर इस बात की प्रतिज्ञा करें, इकरार करें कि हम चाहें जो कुछ हो, कोई ऐसी बात नहीं करेंगे जिससे भारत के माथे पर धब्बा लगे, कोई बात भी हो जो कि भारत को नुक्सान करे और उसकी सेवा करेंगे ।

भारत की सेवा करने के माने क्या हैं ? भारत कोई ऐक तस्वीर नहीं है, हमारे दिल में तस्वीर जो है, भारत की सेवा करना, भारत के रहने वालों की सेवा करना । भारत में जो सब रहते हैं, वही भारत की सेवा है और कोई अलग कोई जंगल में बैठ के उसकी सेवा तो होगी नहीं, जनता की सेवा है, जनता को उभारना है, बहुत दिन से दबी हुई जनता उभर रही है, उसको मदद करना है, इस तरह से हमें बढ़ाना है, तो इसका हम इकरार करें और इकरार कर के याद रखें इसको और सच्चे दिल से इस काम को करने की कोशिश करें चाहे जो कुछ हमारा पेशा हो या काम हो । सभों का काम जो कुछ हो, एक थोड़ा सा अलग भी काम है वो भारत की सेवा का और भारत की सेवा के माने हैं अपने पड़ौसियों की, सेवा का, अपने मुल्क वालों की और सभों को एक समझना, चाहे वो कोई मजहब हो, कोई धर्म हो । अगर हिन्दुस्तानी हैं, तो हमारे भाई हैं, यों तो हमारे बाहर के भाई भी

हो सकते हैं, लेकिन खास यह हमारी बिरादरी है । तो यह मैं चाहता हूं आप करें और छोटे झगड़ों में न पड़ें, छोटी बहसों में न पड़ें । अलग-अलग राय होती हैं, वो ठीक है, राय होनी चाहिए । अलग-अलग जिन्दा कौम है हम, कोई हम सभों के दिमाग नहीं बांध देते हैं कि एक ही तरह से सोचें, एक ही तरह से करें । लेकिन बाज बातों में अलग राय की गुंजाइश नहीं है, हिन्दुस्तान की खिदमत में अलग राय की गुंजाइश नहीं है, हिन्दुस्तान की रक्षा में, हिफाजत में अलग राय की गुंजाइश नहीं है, वो हरेक का फर्ज है चाहे जो कुछ हो । तो इसका हम पक्का इरादा आज कर लें और कर लें, रोज कुछ याद रखें तो हमारे थोड़े से काम से, थोड़ी-थोड़ी सेवा से एक पहाड़ हो जायेगी, पहाड़ बनेंगे जो कि भारत को बढ़ाएंगे और हिफाजत करेंगे ।

जयहिन्द !

अब मेरे साथ आप तीन बार जयहिन्द कहिए ।

जयहिन्द । जयहिन्द ! जयहिन्द !

=======
=====
===
=